ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-1 (Jan.March) 2025
Page No.- 12-18
©2025 Gyanvividha
www.journal.gyanvividha.com

राजकुमार जांगिड़
सहायक आचार्य , संजीवनी महाविद्यालय, विजयनगर, ब्यावर(राजस्थान).

Corresponding Author :

राजकुमार जांगिड़
सहायक आचार्य , संजीवनी महाविद्यालय, विजयनगर, ब्यावर(राजस्थान).

मध्य एशिया और अफगानिस्तान में न्यू ग्रेट गेम: प्रमुख शक्तियों का भू-राजनीतिक प्रभाव

सारांश

मध्य एशिया और अफगानिस्तान में "नया महान खेल" एक बहुस्तरीय भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का प्रतीक है, जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस और चीन जैसी प्रमुख वैश्विक शक्तियाँ शामिल हैं। ऊर्जा संसाधनों से समृद्ध और व्यापार मार्गों व वैश्विक वाणिज्य के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में स्थित यह क्षेत्र, सामाजिक-आर्थिक असमानताओं, शासन की चुनौतियों और बाहरी हस्तक्षेपों के कारण गहरी अस्थिरता का सामना कर रहा है। इस जटिल परिदृश्य के केंद्र में चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई), रूस की यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन (ईएईयू), और संयुक्त राज्य अमेरिका की रणनीतिक नीतियाँ हैं, जो इस क्षेत्र में प्रभाव और वर्चस्व के लिए प्रतिस्पर्धा कर रही हैं।

यह शोध यह पता लगाने का प्रयास करता है कि ये आपस में गुँथी हुई भू-राजनीतिक महत्वाकांक्षाएँ क्षेत्र के आर्थिक, राजनीतिक और सुरक्षा परिदृश्य को किस प्रकार प्रभावित कर रही हैं। इसके साथ ही, यह अध्ययन किर्गिस्तान और ताजिकिस्तान जैसे छोटे क्षेत्रीय खिलाड़ियों की भूमिका पर भी प्रकाश डालता है, जो इन महाशक्तियों की प्रतिद्वंद्विता के बीच अपनी संप्रभुता और राष्ट्रीय हितों को बनाए रखने का प्रयास कर रहे हैं।

वर्तमान साहित्य में ऐतिहासिक और ऊर्जा-आधारित दृष्टिकोण पर पर्याप्त ध्यान दिया गया है, लेकिन उभरते हुए पहलुओं जैसे साइबर रणनीतियाँ, हाइब्रिड युद्ध, और समाजशास्त्रीय जटिलताओं जैसे भ्रष्टाचार और सत्तावाद पर व्यापक विश्लेषण का अभाव है। यह अध्ययन इन अंतरालों को भरने का प्रयास करता है और बाहरी हस्तक्षेपों के प्रति क्षेत्रीय प्रतिक्रियाओं, जल-संसाधनों पर आधारित संघर्ष जैसी पर्यावरणीय चुनौतियों, तथा सांस्कृतिक और तकनीकी

कारकों के अंतर्संबंध का विश्लेषण करता है।
अंततः, इस शोध का उद्देश्य यह समझ प्रदान करना है कि "नया महान खेल" क्षेत्रीय स्थिरता, विकास के रास्तों और वैश्विक शक्ति संरचनाओं की बदलती गतिशीलता को किस प्रकार प्रभावित करता है।

परिचय

वर्तमान समय में "न्यू ग्रेट गेम" रणनीतिक लक्ष्यों की एक विस्तृत श्रेणी को समेटे हुए है, जिसमें व्यापार मार्ग, ऊर्जा संसाधन, और तकनीकी प्रभुत्व जैसे पहलू शामिल हैं। इस नई प्रतिस्पर्धा का केंद्रबिंदु चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) बन गया है, जो पूरे मध्य एशिया और उससे आगे के क्षेत्रों में विशाल बुनियादी ढांचे के विकास की परियोजना है। यह आर्थिक योजना न केवल चीन के व्यापारिक संबंधों को सुदृढ़ करने का प्रयास करती है, बल्कि क्षेत्र के देशों पर अपने राजनीतिक प्रभाव को विस्तार देने का भी लक्ष्य रखती है। इसके जवाब में, अमेरिका ने "बिल्ड बैक बेटर वर्ल्ड" (B3W) जैसे कार्यक्रम शुरू किए हैं, जो चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने के लिए वैकल्पिक विकास मार्ग प्रदान करने का प्रयास करते हैं। यह प्रतिस्पर्धा न केवल आर्थिक और राजनीतिक हितों के टकराव को दर्शाती है, बल्कि क्षेत्रीय स्थिरता और वैश्विक शक्ति संरचना को भी प्रभावित करती है।

रूस ने सैन्य सहयोग, ऊर्जा कूटनीति, और आर्थिक एकीकरण जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से अपने पारंपरिक प्रभाव क्षेत्र को बनाए रखने का लक्ष्य निर्धारित किया है। वहीं, भारत, तुर्की और ईरान जैसे आसन्न देश मध्य एशिया में अपने-अपने भू-राजनीतिक लक्ष्यों को आगे बढ़ाते हुए इस "न्यू ग्रेट गेम" को और अधिक जटिल बना रहे हैं। इस प्रतिस्पर्धा ने प्रतिद्वंद्वियों, सहयोगियों और साझा हितों का एक जटिल नेटवर्क तैयार कर दिया है, जो क्षेत्रीय और वैश्विक शक्ति संतुलन को प्रभावित कर रहा है। इसके अतिरिक्त, गैर-सरकारी संगठनों, बहुराष्ट्रीय निगमों, और अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों ने भी क्षेत्र की भू-राजनीतिक संरचना को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी शुरू कर दी है। इन विभिन्न खिलाड़ियों की भागीदारी ने मध्य एशिया के परिदृश्य को और भी बहुआयामी और जटिल बना दिया है।

जैसे-जैसे संघर्ष और तीव्र होता जा रहा है, साइबर सुरक्षा, जल संसाधन प्रबंधन, और आतंकवाद का मुकाबला यूरेशिया में प्रभाव और नियंत्रण के लिए इस बहुआयामी प्रतिस्पर्धा के नए मोर्चे बन गए हैं। अफगानिस्तान और मध्य एशिया की आधुनिक भू-राजनीतिक प्रासंगिकता अब केवल उनके भौगोलिक स्थान या तेल संसाधनों तक सीमित नहीं है।

चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई), जो पुराने सिल्क रोड के व्यापारिक मार्गों को पुनर्जीवित करने का प्रयास कर रही है, वैश्विक वाणिज्य नेटवर्क में एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभर रही है। इस महत्वाकांक्षी परियोजना में न केवल यूरेशिया की शक्ति संतुलन और आर्थिक वातावरण को बदलने की क्षमता है, बल्कि यह अन्य देशों को भी अपनी कनेक्टिविटी परियोजनाएँ शुरू करने के लिए प्रेरित कर रही है। बीआरआई वैश्विक भू-राजनीति में नए आर्थिक और रणनीतिक अवसरों का मार्ग प्रशस्त करती है, जिससे क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा और भी जटिल हो जाती है।

अफगानिस्तान और मध्य एशिया में "न्यू ग्रेट गेम" अब केवल भौगोलिक वर्चस्व तक सीमित नहीं है, बल्कि यह प्रमुख वैश्विक शक्तियों के बीच भू-राजनीतिक लक्ष्यों, आर्थिक आकांक्षाओं और रणनीतिक चालबाज़ियों का एक जटिल संवाद बन गया है। 19वीं शताब्दी के ग्रेट गेम के इस आधुनिक संस्करण में ऊर्जा संसाधनों, व्यापार मार्गों और वैचारिक प्रभुत्व पर प्रभाव जमाने की बहुआयामी प्रतिस्पर्धा शामिल है। क्षेत्र के विशाल हाइड्रोकार्बन भंडार और रणनीतिक भौगोलिक स्थिति इसकी महत्वपूर्ण प्रासंगिकता को रेखांकित करते हैं। ये विशेषताएँ इसे क्षेत्रीय एकीकरण और विकास की परस्पर विरोधी अवधारणाओं का केंद्रबिंदु बनाती हैं,

जिससे यह न केवल क्षेत्रीय बल्कि वैश्विक शक्ति संतुलन में भी एक प्रमुख भूमिका निभाता है।

रूस, चीन और अमेरिका की भू-राजनीतिक नीतियां उनके राष्ट्रीय उद्देश्यों और वैश्विक एजेंडा का प्रतिबिंब हैं। रूस का दृष्टिकोण अपने ऐतिहासिक प्रभाव क्षेत्र पर आधारित है, जिसमें सीएसटीओ (कलेक्टिव सिक्योरिटी ट्रीटी ऑर्गनाइजेशन) के माध्यम से सुरक्षा सहयोग और ईएईयू (यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन) के माध्यम से आर्थिक एकीकरण के जरिए अपना प्रभुत्व बनाए रखना शामिल है। चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) एक साहसिक आर्थिक योजना है, जिसका उद्देश्य बाजारों और संसाधनों तक अपनी पहुँच सुनिश्चित करना और प्राचीन व्यापार मार्गों को पुनर्जीवित करना है। दूसरी ओर, संयुक्त राज्य अमेरिका अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म दृष्टिकोण अपनाते हुए रूसी और चीनी प्रभाव को संतुलित करने की कोशिश करता है। इसके लिए वह क्षेत्रीय स्थिरता और आतंकवाद विरोधी परियोजनाओं पर विशेष जोर देता है। इन अतिव्यापी और कई बार विरोधाभासी नीतियों ने एक जटिल भू-राजनीतिक परिदृश्य उत्पन्न किया है। इस परिदृश्य में, अफगानिस्तान और मध्य एशियाई देशों की सरकारों को अपनी संप्रभुता बनाए रखने और महान शक्तियों की प्रतिद्वंद्विता के बीच अपने राष्ट्रीय हितों को साधने के लिए अत्यंत सावधानीपूर्वक बातचीत करनी पड़ती है।

ऐतिहासिक परिपेक्ष्य

एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण क्षेत्र की दीर्घकालिक प्रासंगिकता और महान शक्तियों के संघर्ष के उन पैटर्न को समझने में मदद करता है, जो आज इसके भविष्य को आकार दे रहे हैं। इसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित, "न्यू ग्रेट गेम" के नए घटकों पर हाल के विद्वानों जैसे अहमद राशिद और शामखल अबिलोव के शोध ने महत्वपूर्ण प्रकाश डाला है।

अहमद राशिद की पुस्तक *"तालिबान: इस्लाम, ऑयल, एंड द न्यू ग्रेट गेम इन सेंट्रल एशिया"* (2001) इस बात पर केंद्रित है कि अफगानिस्तान की राजनीतिक अस्थिरता और उसकी रणनीतिक स्थिति ने इसे आधुनिक भू-राजनीति में एक प्रमुख भूमिका दी है। राशिद इस बात को रेखांकित करते हैं कि विदेशी हस्तक्षेप, आतंकवाद, और ऊर्जा राजनीति की जटिल बातचीत कैसे क्षेत्र को लगातार प्रभावित और परिभाषित करती है[1]।

इसी तरह, शामखल अबिलोव का शोध यह उजागर करता है कि सोवियत संघ के विघटन के बाद कैस्पियन क्षेत्र वैश्विक संघर्ष के केंद्र में क्यों आ गया। क्षेत्र के महत्वपूर्ण हाइड्रोकार्बन भंडार और इसकी रणनीतिक स्थलाकृति ने इसे विश्व राजनीति में अत्यधिक प्रासंगिक बना दिया है, जिससे यह विभिन्न वैश्विक शक्तियों और क्षेत्रीय खिलाड़ियों के लिए आकर्षण का केंद्र बन गया है[2]।

इन आधुनिक अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि ऐतिहासिक संघर्ष के पैटर्न समय के साथ विकसित होकर ऊर्जा सुरक्षा, आतंकवाद, और आर्थिक प्रभुत्व जैसे नए तत्वों को समाहित कर चुके हैं। परिणामस्वरूप, मध्य एशिया एक जटिल और बहुआयामी भू-राजनीतिक परिदृश्य के रूप में उभर रहा है।

ऊर्जा राजनीति और आर्थिक प्रतिस्पर्धा

भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा अब मुख्य रूप से ऊर्जा संसाधनों और उनके रणनीतिक निहितार्थों के इर्द-गिर्द केंद्रित हो गई है। यह विशेष रूप से मध्य एशिया के प्राकृतिक गैस और तेल भंडार पर लागू होता है। इस प्रतिस्पर्धा को अक्सर "न्यू ग्रेट गेम" के रूप में जाना जाता है। कई वैश्विक शक्तियां इन ऊर्जा संसाधनों के नियंत्रण के लिए संघर्ष कर रही हैं, जिससे क्षेत्र में उनका प्रभाव और प्रभुत्व परिभाषित होता है। इसके साथ ही, वे ऊर्जा के पारगमन मार्गों पर भी वर्चस्व स्थापित करने की होड़ में लगी हैं।

लुत्ज़ क्लेवमैन ने अपनी पुस्तक *"द न्यू ग्रेट गेम"* (2003) में पाइपलाइनों की प्रासंगिकता पर विशेष ध्यान दिया है। इसमें तुर्कमेनिस्तान-चीन पाइपलाइन

और ट्रांस-कैस्पियन पाइपलाइन जैसी परियोजनाएँ शामिल हैं। क्लेवमैन का कहना है कि "इस प्रतिस्पर्धा के प्रमुख उपकरण ये पाइपलाइनें हैं।" रूस, जो इस क्षेत्र में ऐतिहासिक रूप से एक प्रमुख शक्ति रहा है, अपनी स्थिति बनाए रखने के लिए सक्रिय रूप से प्रयास कर रहा है। यह अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और मौजूदा ऊर्जा मार्गों पर नियंत्रण का उपयोग करते हुए अपनी ताकत का प्रदर्शन करता है। दूसरी ओर, चीन ने मध्य एशिया के ऊर्जा बुनियादी ढांचे में भारी निवेश किया है। इन निवेशों का उद्देश्य न केवल चीन की ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करना है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय आपूर्तिकर्ताओं पर अपनी निर्भरता को भी कम करना है[3]। यह परिदृश्य स्पष्ट रूप से दिखाता है कि ऊर्जा संसाधन और पारगमन मार्ग इस भू-राजनीतिक खेल के प्रमुख तत्व हैं, जो क्षेत्रीय और वैश्विक शक्ति संतुलन को आकार दे रहे हैं।

इस ऊर्जा-प्रधान संघर्ष का भू-राजनीतिक संदर्भ मध्य एशिया तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें अफगानिस्तान सहित आसपास के देश भी शामिल हैं। अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा राजनीति में अफगानिस्तान की रणनीतिक केंद्रीयता को एड्रीस बरना के शोध में रेखांकित किया गया है। बरना के अनुसार, अफगानिस्तान की राजनीतिक अस्थिरता और विदेशी हस्तक्षेपों के इतिहास ने इसे एक विवादित क्षेत्र बना दिया है। इसके अलावा, वाणिज्यिक मार्गों और ऊर्जा पाइपलाइनों के लिए इसे एक संभावित स्थल के रूप में देखा जाता है[4]।

यह संवेदनशील स्थिति न केवल क्षेत्रीय स्थिरता और ऊर्जा सुरक्षा को प्रभावित करती है, बल्कि अफगानिस्तान के अपने विकास को भी बाधित करती है। मीना सिंह रॉय ने चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) का विश्लेषण करते हुए इस संघर्ष के व्यापक भू-राजनीतिक आयामों पर प्रकाश डाला है। उनका अध्ययन बीआरआई की वित्तीय और रणनीतिक जटिलताओं को उजागर करता है[5]।

बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) का उद्देश्य मध्य एशिया को एक व्यापक आर्थिक और व्यापारिक नेटवर्क से जोड़ना है। बुनियादी ढांचे और व्यापार से संबंधित परियोजनाएं इस नेटवर्क का हिस्सा हैं। यह पहल क्षेत्रीय गतिशीलता को पुनः परिभाषित करने और अमेरिकी प्रभाव को संतुलित करने के चीन के दुस्साहसिक प्रयासों को दर्शाती है[6]।

ऊर्जा राजनीति का यह बहुआयामी दृष्टिकोण विभिन्न राष्ट्रों के हितों के बीच जटिल बातचीत को उजागर करता है। यह संसाधन नियंत्रण की आवश्यकता और न्यू ग्रेट गेम के बदलते संदर्भ में रणनीतिक अभिविन्यास के महत्व पर विशेष जोर देता है।

सैन्य और सुरक्षा आयाम

मध्य एशिया में "न्यू ग्रेट गेम" के सैन्य और सुरक्षा पहलू अत्यधिक जटिल और बहुआयामी हो गए हैं। बोरिस रुमर की पुस्तक *"मध्य एशिया: ए न्यू ग्रेट गेम!"* में इस क्षेत्र में सैन्य उपस्थिति और भू-राजनीतिक उद्देश्यों का व्यापक अवलोकन प्रस्तुत किया गया है। किर्गिस्तान और ताजिकिस्तान में अमेरिकी सैन्य ठिकानों की स्थापना ने क्षेत्रीय शक्ति संतुलन में महत्वपूर्ण बदलाव किया है, जिससे चीन और रूस की तीव्र प्रतिक्रियाएँ सामने आई हैं[7]। रूस, सामूहिक सुरक्षा संधि संगठन (सीएसटीओ) के माध्यम से, अपने पारंपरिक प्रभाव क्षेत्र पर अधिकार बनाए रखने की कोशिश कर रहा है।

चीन की बढ़ती सैन्य उपस्थिति, जिसमें जिबूती में उसका पहला विदेशी सैन्य अड्डा शामिल है, यह संकेत देती है कि वह अपने वाणिज्यिक हितों की रक्षा और अपने रणनीतिक प्रभाव को मजबूत करना चाहता है। रिचर्ड वेइट्ज़ के अनुसार, अफगानिस्तान से अमेरिका की वापसी ने मध्य एशिया के सुरक्षा परिदृश्य को और अधिक जटिल बना दिया है। रूस और चीन इस खाली हुए शक्ति क्षेत्र को भरने के लिए तत्पर हैं, जिससे क्षेत्र में अधिक प्रतिस्पर्धा और संभावित टकराव की स्थिति बन रही है[8]।

यह बदलती हुई गतिशीलता न केवल

क्षेत्रीय स्थिरता, बल्कि वैश्विक शक्ति संबंधों को भी गहराई से प्रभावित कर रही है। मुशर्रफ इकबाल के नव-यथार्थवादी दृष्टिकोण से यह स्पष्ट होता है कि सुरक्षा चिंताओं और क्षेत्रीय वर्चस्व की आकांक्षाएँ रूस, चीन, और अमेरिका के बीच प्रतिद्वंद्विता को संचालित करती हैं। इस संघर्ष के विभिन्न रूपों में सैन्य अभ्यास, हथियारों की बिक्री, और मध्य एशिया की सरकारों के साथ सुरक्षा समझौते शामिल हैं।

इस "न्यू ग्रेट गेम" के सुदृढ़ होने से मध्य एशियाई देशों की संप्रभुता और सुरक्षा पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। इन देशों को महान शक्तियों के प्रतिस्पर्धी हितों के बीच संतुलन साधते हुए अपनी स्वतंत्रता और स्थिरता[9] बनाए रखने के लिए सतर्कता और रणनीतिक कौशल का प्रदर्शन करना पड़ता है।

क्षेत्रीय प्रतिक्रियाएं और रणनीतियाँ

जैसा कि मंज़ूर खान अफरीदी ने रेखांकित किया है, मध्य एशियाई देशों द्वारा अपनाया गया "मल्टी-वेक्टर" दृष्टिकोण एक जटिल भू-राजनीतिक परिदृश्य में स्वायत्तता बनाए रखने और अधिकतम लाभ प्राप्त करने की एक कुशल कूटनीतिक रणनीति को दर्शाता है। यह रणनीति इन छोटे राष्ट्रों को परस्पर विरोधी हितों का प्रबंधन करने और रूस, चीन, और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे प्रमुख शक्तिशाली देशों के साथ संबंधों को संतुलित रखने की अनुमति देती है, जिससे वे किसी एक देश पर अत्यधिक निर्भर होने से बच सकते हैं।

राजनयिक और वाणिज्यिक संबंधों को प्रोत्साहित करते हुए, ये देश अपने रणनीतिक भूगोल का उपयोग निवेश आकर्षित करने, अनुकूल व्यापार समझौतों पर बातचीत करने, और क्षेत्रीय प्रभाव बढ़ाने के लिए कर सकते हैं[10]। शामखल अबिलोव के अध्ययन इन देशों द्वारा अपनाई गई रणनीतिक गणनाओं को स्पष्ट करते हैं, जो उन्हें महान शक्तियों के संघर्ष के बीच अपने हित साधने का अवसर प्रदान करते हैं। बड़ी शक्तियों के विरोधी हितों के बीच संतुलन साधने की यह कोशिश इन राष्ट्रों को उनकी संप्रभुता बनाए रखने और आर्थिक लाभ प्राप्त करने में सक्षम बनाती है[11]।

यह रणनीति इन सरकारों को शक्तिशाली देशों को एक-दूसरे के खिलाफ कुशलतापूर्वक इस्तेमाल करने में मदद करती है। इससे उन्हें वार्ता में बेहतर शर्तें प्राप्त करने और भू-राजनीतिक संघर्षों में मात्र मोहरे बनने के जोखिम को कम करने में सहायता मिलती है।

इस दृष्टिकोण की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि मध्य एशियाई नेता अपनी विदेश नीति में कितने लचीले हैं और वे बड़ी शक्तियों की प्रतिद्वंद्विता से कैसे लाभ उठा सकते हैं। यह लचीलापन और व्यापक क्षेत्रीय गतिशीलता का ज्ञान उन्हें अपनी स्वतंत्रता बनाए रखने और बड़े देशों के विरोधाभासी हितों से अधिकतम लाभ उठाने में मदद करता है।

वर्तमान शोध और क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य

हाल की अकादमिक पुस्तकों ने मध्य एशिया के बदलते भू-राजनीतिक परिदृश्य का गहन और व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। एरियल कोहेन की पुस्तक *"द न्यू ग्रेट गेम: मध्य एशिया में भूराजनीति"* इस बात पर प्रकाश डालती है कि अंतरराष्ट्रीय शक्ति संतुलन में हो रहे परिवर्तन इस क्षेत्र को कैसे प्रभावित कर रहे हैं। कोहेन ने रूस के चीन के प्रति भू-राजनीतिक झुकाव के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए नए शक्ति समीकरणों और मध्य एशिया में उभरते हुए नए गठबंधनों का विश्लेषण किया है। वह तुर्की और ईरान की बढ़ती भूमिका की भी पड़ताल करते हैं, जो इस क्षेत्र में चल रही भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा को नई दिशा दे रही है और पारंपरिक शक्तियों, जैसे रूस और चीन के प्रभाव को चुनौती दे सकती है[12]।

इस विषय पर एस. फ्रेडरिक स्टार की पुस्तक *"द न्यू सिल्क रोड्स: ट्रांसपोर्ट एंड ट्रेड इन ग्रेटर सेंट्रल एशिया"* कोहेन के अनुसंधान को और गहराई प्रदान करती है। यह पुस्तक क्षेत्र में प्रमुख बुनियादी ढांचा परियोजनाओं और उनके वित्तीय परिणामों पर केंद्रित

है, विशेषकर चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) के संदर्भ में[13]।

मध्य एशिया और अफगानिस्तान में "न्यू ग्रेट गेम" एक तीव्र भू-राजनीतिक संघर्ष के रूप में उभरा है, जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस और चीन जैसी प्रमुख वैश्विक शक्तियां शामिल हैं। यह क्षेत्र वैश्विक तेल आपूर्ति, व्यापार मार्गों और रणनीतिक सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। हालांकि, यह क्षेत्र सामाजिक-आर्थिक असमानताओं, खराब शासन और बाहरी हस्तक्षेपों के कारण लगातार अस्थिरता का सामना कर रहा है।

हालांकि वैश्विक शक्तियों द्वारा प्रायोजित बुनियादी ढांचा परियोजनाएँ आर्थिक लाभ प्रदान करती हैं, वे अक्सर क्षेत्रीय असमानताओं और निर्भरता को भी गहरा करती हैं। पीटर हॉपकिर्क और लुत्ज़ क्लेवमैन जैसे विद्वानों के ऐतिहासिक और ऊर्जा-केंद्रित अध्ययन इस क्षेत्र की पृष्ठभूमि को समझने में सहायक हैं, लेकिन समकालीन मुद्दों जैसे हाइब्रिड युद्ध, साइबर रणनीतियों, और छोटे क्षेत्रीय खिलाड़ियों की भूमिकाओं पर व्यापक ध्यान देने की कमी है।
अफगानिस्तान की नीति निर्माण में संभावित भूमिका, चीन के बीआरआई और रूस के ईएईयू के प्रभाव, और भ्रष्टाचार, अधिनायकवाद, और प्रतिरोध आंदोलनों जैसे सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों को अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है।

यह अध्ययन इन अनदेखे पहलुओं को संबोधित करने का प्रयास करता है। इसका उद्देश्य क्षेत्रीय रणनीतियों, प्रतिक्रियाओं, और पर्यावरणीय कारकों का विश्लेषण करना है, ताकि क्षेत्रीय स्थिरता और वैश्विक शक्ति संतुलन पर उनके प्रभाव का आकलन किया जा सके।

निष्कर्ष

यह अध्ययन मध्य एशिया और अफगानिस्तान में "न्यू ग्रेट गेम" की जटिलताओं को उजागर करता है, जहां संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, और चीन जैसी प्रमुख शक्तियों की भू-राजनीतिक रणनीतियाँ, आर्थिक महत्वाकांक्षाएँ और सुरक्षा चिंताएँ आपस में गहराई से जुड़ी हुई हैं। मध्य एशिया की विशाल संसाधन संपदा और उसकी रणनीतिक भौगोलिक स्थिति इसे वैश्विक शक्ति संघर्षों का केंद्र बिंदु बनाती है।

हालांकि चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) और रूस के यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन (ईएईयू) जैसे निवेश आर्थिक विकास का वादा करते हैं, वे क्षेत्रीय निर्भरता, संप्रभुता के क्षरण और असमान विकास के मुद्दों को भी जन्म देते हैं। शोध में किर्गिस्तान और ताजिकिस्तान जैसे छोटे लेकिन महत्वपूर्ण क्षेत्रीय खिलाड़ियों की भूमिकाओं पर प्रकाश डाला गया है। उनकी "मल्टी-वेक्टर" कूटनीति यह दर्शाती है कि कमजोर राज्य कैसे बड़ी शक्तियों के परस्पर विरोधी हितों के बीच संतुलन साधकर अपनी स्वायत्तता बनाए रखते हैं और लाभ प्राप्त करते हैं।

हालांकि, चुनौतियाँ बनी हुई हैं, जिनमें खराब शासन, पर्यावरणीय गिरावट और सामाजिक-राजनीतिक अस्थिरता प्रमुख हैं। अफगानिस्तान, क्षेत्रीय संपर्क का एक महत्वपूर्ण केंद्र और सुरक्षा चिंताओं का एक प्रमुख बिंदु होने के कारण, इस बदलते भू-राजनीतिक परिदृश्य में और अधिक महत्वपूर्ण हो गया है।

अध्ययन यह भी रेखांकित करता है कि जल प्रबंधन और पर्यावरणीय स्थिरता जैसी साझा समस्याओं को हल करने के लिए क्षेत्रीय सहयोग अत्यावश्यक है। इसके अलावा, यह सामाजिक-राजनीतिक समावेशिता और अवसंरचनात्मक विकास के बीच संतुलन बनाए रखने के महत्व पर जोर देता है, ताकि न्यायसंगत विकास सुनिश्चित किया जा सके।
भविष्य के अनुसंधान के लिए, "न्यू ग्रेट गेम" के भीतर डिजिटल बुनियादी ढांचे में निवेश, साइबर युद्ध, और वैचारिक प्रतिस्पर्धाओं के बढ़ते प्रभावों पर गहन अध्ययन आवश्यक है। साथ ही, मध्य एशियाई समाजों पर प्रमुख शक्ति हस्तक्षेपों के दीर्घकालिक सामाजिक-राजनीतिक प्रभावों का विश्लेषण भी महत्वपूर्ण है।

अंततः, यह समझना कि क्षेत्रीय सहयोग के ढांचे महान शक्ति प्रतिद्वंद्विता के नकारात्मक प्रभावों को कैसे कम कर सकते हैं, अध्ययन का एक अनिवार्य क्षेत्र बना हुआ है। इन मुद्दों को संबोधित करते हुए, भविष्य के शोध ऐसी टिकाऊ रणनीतियों को विकसित करने में योगदान कर सकते हैं जो क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा दें और मध्य एशियाई देशों को वैश्विक भू-राजनीति में अधिक स्वतंत्रता और प्रभाव प्राप्त करने में सक्षम बनाएं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Rashid, A. (2001). *Taliban: Islam, Oil, and the New Great Game in Central Asia.* I.B. Tauris.
2. Abilov, S. (2010). The "New Great Game" Over the Caspian Region: Russia, the USA, and China in the Same Melting Pot. *Khazar Journal of Humanities and Social Sciences,29,27-35.*
3. Kleveman, L. (2003). *The New Great Game: Blood and Oil in Central Asia.* Atlantic Monthly Press.
4. Barna, E. (2024). Afghanistan's Geopolitical and Geostrategic Importance for International Security: A Great Game Theory Analysis of Its Role Across Three Centuries. Master's Thesis. Submitted to Faulty of Social Social Science, Institute of Political Studies, Department of Security Studies, Charles University. Prague: Charles University
5. Roy, Meena Singh. "India's' Connect Central Asia'Policy: Building Cooperative Partnership." *Indian Foreign Affairs Journal* 8.3 (2013): 301-316.
6. Roy, Meena Singh. "India's' Connect Central Asia'Policy: Building Cooperative Partnership." Indian Foreign Affairs Journal 8.3 (2013): 301-316.
7. Rumer, B. (2002). *Central Asia: A New Great Game?* Journal of International Affairs.
8. Weitz, R. (2021). *The New 'Great Game' in Central Asia after Afghanistan.* Council on Foreign Relations.
9. Iqbal, M. (2015). *New Great Game in Central Asia: Neo-realist Perspectives.* University of Peshawar.
10. Afridi, M. K. (2020). *New Great Game in Central Asia: Conflicts, Interests and Strategies of Russia, China, and United States.* Academia.edu.
11. Abilov, S. (2010). The "New Great Game" Over the Caspian Region: Russia, the USA, and China in the Same Melting Pot. Khazar Journal of Humanities and Social Sciences,29,27-35.
12. Cohen, A. (2006). *The New Great Game: Geopolitics in Central Asia.* Heritage Foundation.
13. Starr, S. F. (2007). *The New Silk Roads: Transport and Trade in Greater Central Asia.* Johns Hopkins University Press.

•